REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

हिंदु धर्म के सोलह संस्कार : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रा.डॉ.पडोळे डी.व्ही.
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख , बी.एस.एस.कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय माकणी
ता.लोहारा. जि.उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

❖ प्रस्ताविक

भारतीय संस्कृति के अजस्त्र प्रवाह में जिन अवधारणाओं ने शैन-शैन एक निश्चित स्वरूप ग्रहण करके भारत के मानव-जीवन को अत्याधिक प्रभावित किया और जो हिन्दू धर्म का एक अनिवार्य अंग बन गई, उनमे से एक अवधारणा संस्कार की थी | वेदो में संस्कार शब्द उपलब्ध नही होता | सम उपसर्ग पूर्वक **'कृ'** धातू से निष्पन्न 'संस्कृत'शब्द का अर्थ भली प्रकार निष्पान्न है | 'संस्कृरोति' शब्द बनाने में उपनिषदो में उपयुक्त हूआ है | जैमिनी द्वारा संस्कार शब्द का अनेक बार प्रयोग हूआ | **संस्कार** वह है जिसके हो | जाने पर पदार्थ (या व्यक्ती) किसी कार्य के योग्य हो जाता है | संस्कार किये जाने से व्यक्ती वेदाध्ययन या ग्रहस्थाश्रम प्रवेश में योग्य हो जाता है | और वीर्य अथवा गर्भादि के विभीन्न दोषो का परिग्रहण हो जाता है| इन दो अध्ययनो पर बल दिये जाने के कारण भारत के जनजिवन में संस्कारो की अनिवार्यता का प्रारंभ हो गया.

भारतवर्ष में वेंदो प्रति हिंदु धर्म का आदि स्त्रोत माना है मगर वेदो में संस्कार शब्द प्राप्त नही होता | और संस्कार के प्रति निश्चित विधि या निषेध नही मिलते. किन्तु ऋग्वेद में गर्भाधान विवाह तथा अंत्योष्टी के मन्त्र प्राप्त है|

❖ व्याख्या :-

१) मानव व्यक्तीमत्व का सर्वागीण विकास ही संस्कार है |

❖ मधातिथी ने मनु के श्लोक :-

केवल शरीर की ही शुदधी नही अपितु आत्मा को भी संस्कृत माना | शुद्ध् शरीर में ही पवित्र आत्मा निवास करती है|

❖ संख्या :-

संस्कारो की संख्या के संबंध में भारतीय विचारक सहमत नही है| **गौतम** ने संस्कारो की संख्या **चालीस** कही है | जैसे :- **पाकयज्ञ,** हविर्यज्ञ, **सोमयज्ञ** आदि| **मनुस्मृती , याज्ञ वल्कय** स्मृति में कोई संख्या नही है| परंतु गर्भयान से अन्टयोष्टी तक के संस्कारो की कोई संख्या नही दी गई है | परवर्धी निबंधकारो ने ही अधिकंश सोलह संस्कारो को मान्यता दी और **'संस्कार'** शब्द को शारीरीक शुध्दता के अर्थ में रुढ कर दिया | आधुनिक युग में **स्वामी दयानंद सरस्वती** ने भी सोलह संस्कारो को मान्यता दी है| **डा.राजबली पाण्डे** ने इन संस्कारो को **पाँच** विभागो में विभाजीत किया १) जन्म से पुर्व के संस्कार २) शिशु के संस्कार ३) शिक्षा संबंधी संस्कार ४) विवाह तथा ५) अन्त्योष्टी इन संस्कारो का स्वरुप इस प्रकार का है|

१) गर्भाधान संस्कार :-

इस संस्कार को निषेक अथवा चतुर्थी कर्म भी कहा गया है| किंतु वैश्वानस ने निषेक तथा गर्भाधान को भिन्न भिन्न माना है इस संस्कार के द्वारा माता के गर्भ में बीजरुप से शिशु प्रतिष्ठित किया जाता है| पति एवं पत्नी उपवास तथा विभिन्न यज्ञा दि से मन को पवित्र करके, परस्पर अनुरक्त मन होकर, देवता ओकें आवाहन पुर्वक सन्तानोत्पती में प्रवृत्त होते थे | और पुत्र की कामना करते थे |बाद में भिन्न भिन्न प्रकार का

भोजन करते थे | वेद में इस संस्कार का प्रमाण नही मगर गर्भाधान का संकेत आवश्य है| वंश, समाज देश की उत्तरोत्तर अभिवृत्ती के लिये पति-पत्नी सहज काम प्रवृत्ती को नियमित एवं संयमित करके उत्तम संतान की उत्पत्ती के लिये यह संस्कार महत्वपुर्ण माना है|

२) पुसंवन संस्कार :-

इस संस्कार का वर्णन सभी ग्रहसुत्रो में माना है | पुसंवन का शाब्दीक अर्थ है पुरूष पुत्र की प्राप्ति हेतू किया गया यज्ञ कर्म है | इसका अभिप्राय यह है की, होने वाली संतती पुत्र ही हो इस लिये यह संस्कार किया जाता है | इस संस्कार को गर्भस्थिती के तृतीय चतुर्थ अथवा आठवे मास तक कभी भी किया जा सकता है|

३) सीमन्तोन्नवन संस्कार :-

इस संस्कार का यह विशिष्ठ नाम इसलिए पडा | क्योंकि इस संस्कार में गर्भवती स्त्री के केशों में पति स्वय सीमन्त (मांग) निकालता है | गर्भवस्था में विभिन्न भुतादि यो नियॉं स्त्री पर आक्रमण कर सकती है| इसकी सुरक्षा का ध्यान रखा जाए इस संस्कार में गर्भवती स्त्री को प्रसन्न रखे. इस संस्कार का समय ग:स्थिती के चौथे या पांचवे मास में कहा गया है|

४) जात कर्म संस्कार :-

बालक के जन्म के समय नाभिच्छदेन से भी पूर्व संस्कार को किया जाता है| अन्यथा दस दिनों बाद भी कर सकते है| यह संस्कार पिता संपन्न करता है| बालक का पिता दही, मध, घी को चटाता है | इससे इंद्रियशक्ती पशुतेज, औषधीयों का इस है |

५) नामकरण संस्कार :-

जीवन में नाम का अत्याधिक महत्व है| नाम सेही वस्तु या व्यक्ती को अन्य व्यक्तियो से भिन्न किया जाता है | इसलिए यह एक धार्मिक संस्कार माना है| **बृहदारण्यक उपनिषद** ने नाम की महता बहूत सुंदर और संक्षीप्त में व्यक्त किया | मरने के बाद मनुष्य को क्या नही छोडता? नामा नाम से ही अनन्त लोको को जितता है| अपना नाम, गोत्र, माता के नाम के साथ, वंशनाम, नक्षत्रनाम, गुप्तनाम आदि | शतपथ ब्राम्हण में यह सर्वप्रथम उल्लेख है| की, उत्पन्न हुए पूत्र को नामकर किया जाना चाहिए| सुत्रो तथा स्मृतियो में बालक जन्म के दसवे महिने से लेकर दुसरे वर्ष कें प्रथम दिन तक यह संस्कार करने का विधान है.

६) कर्णवेध संस्कार:-

चिकीत्सा के अनुसार कान को विशिष्ट स्थल पर छेद देने से आन्त्रवृदधी (हार्निया)नही होता जन्म से दसवे बारहवे अथवा सोलहवे दिन कर्णवेध किया जाना चाहीए|

७) निष्क्रमण संस्कार :-

जन्म से लेकर दो तीन मास तक शिशु को घर के भीतर ही सुरक्षित रखा जाता है| तदनन्तर वह सुर्य तथा चंद्रमा के प्रकाश एवं उद्यानदी की वायु का सेवन करने योग्य होता है| बालक को प्रथम बार घर से बाहर लाने का संस्कार ही निष्क्रमण है|

८) अन्नप्राशन संस्कार :-

जन्म के समय बालक के मधु प्राशन कराते है| उसके उपरान्त बालक कई मास तक माता के स्तनपान से पोषण ग्रहण करता है| छह मास की आयु में बालक के अन्न प्राशन संस्कार का विधान है| इस संस्कार के दिन विभिन्न पाठ के साथ भोजन पकाया जाता है| पिता वाक्, बल, पुष्टता आदि के लिये अग्नी में हवि जलता था और तदनन्तर बालको भोजन का ग्रास देने की क्रिया है|

९) चुडाकरण संस्कार :-

इस संस्कार को **चौलकर्म** भी कहा जाता है | सर के समस्त केशो को काट कर सिर पर चुडा (शिखा) मात्र छोडने के कारण इस संस्कार को यह नाम दिया है|

१०) विद्यारंभ संस्कार:-

आयू के पाचवे अथवा सातवे वर्ष में यह **संस्कार** होता है | हरि (विष्णु) ,लक्ष्मी, विनायक, सरस्वती, बृहस्पती, आदि देवों की पुजा करके अग्नी में होम किया जाता है| अध्यापक पुर्व की और मुँह करके और बालक पश्चिम की और मुँह करके बैठता है | पढना एवं लिखना, दोनो ही सिखाया जाता है | इस क्रिया को विद्यारंभ संस्कार कहेते है|

११) उपनयन संस्कार :-

ऋग्वेद मे ब्रम्हचारी तथा ब्रम्हचर्य शब्दो का प्रयोग दिखता है | जो सुत्र साहीत्य में अधिक विस्तारपुर्वक वर्णीत तैत्तरीम ब्राम्हण, ऐतदेय ब्राम्हण, शपथब्राम्हण, गोपथब्राम्हण, में ब्रम्हचर्य अथवा उपनयन आदि प्रसंग है| कठ, मुण्डण, छान्दोग्य तथा बृहदारण्यक उपनिषद में इस संस्कार से सम्बध मुल्यवान सामग्री है| जैसे आयु, समय, प्रारंभिक कृत्य, यज्ञोदंण्ड , सावित्री उपदेश, शिक्षा, त्रिरात्रवृत्त.

१२) वेदारंभ संस्कार :-

व्यास स्मृति में इसका उल्लेख है | उत्तम तिथी कर प्रारभिक मगल कृत्यो को करके गुरू अपने शिष्य को प्रज्वलीत अग्नी की पश्चीम कि ओर बिठा देता है| ब्राम्हछन्दस तथा प्रजापति को आहुती समर्पीत करके गुरू पढाए जाने विशिष्ठ वेद के लिये नियत घी की आहुतीयाँ भिन्नभिन्न दे कर समर्पीत करता है| ब्राम्हणो को दक्षिणा देने के बाद वेद का अध्ययन किया जाता है| उस विधी को वेदारंभ संस्कार कहेते है|

१३) केशान्त अथवा गोदान संस्कार :-

ब्रम्हचारी के सोलवे वर्ष में यह संस्कार किया जाता है | इस आयु में यौवन प्रविष्ट होता हे | युवावस्था की सहज प्रवृत्तियों के समय पूर्वक ब्रम्हचारी केवल अत: एवं ज्ञान प्राप्ती में लगा रहे- इसी तथ्य पर बल देने के लिए संस्कार किया जाता है|

१४) समावर्तन संस्कार :-

विद्याध्ययन की समाप्ती पर शिष्य गुरू को आमंत्रित करके अपने ब्रम्हचारी जीवन को समाप्त करने की अनुमती माँगता है और गूरूदक्षिणा देकर आचार्य को संतुष्ट करता है| गुरू की अनूमती लेकर स्नान करके छात्र अपने ब्रम्हचारी जीवन अंग को त्याग देता है| नवीन वेशभूषा धारण करके स्नातक हाथी पर बैठ कर विद्वत परिषद के समूख जाता है | और गूरु द्वारा स्नातक का परिचय कराता है|

१५) विवाह संस्कार :-

भारतीय विचारको ने मनुष्य की नितान्त स एवं. सर्वाधिक प्रबल प्रवृत्ती 'काम' को चार पुरूषार्थ में समाविष्ठ करके इसकी महता को मान्यता प्रदान की है| विशुध्द कामभाव मनुष्य तथा पशु दोनो में नैसर्गिक प्रवृत्ती के रूप में पाई जाती है मुक्त कामतृप्ती जहाँ अमर्यादित पशुजीवन की परीचायक है| व मर्यादित कामभावना मनुष्य की सृजनशीलता, सौन्दर्यवृदधी तथा पारस्परीक सहयोग का मुल सम्बल है | काम एवं यौवन संबंध मर्यादित रुप प्रदान करने के लिये ही संभवता सभ्यता के आधार पर ही विवाह संस्कार प्रतिष्ठित हुआ|

१६) अंन्त्योष्टी संस्कार :-

किसी भी हिन्दु के जीवन का अंतिम संस्कार अंन्त्योष्टि है| जिसके द्वारा उसके इहलौकिक आस्तित्व का पराक्ष हो जाता है | यह संस्कार मृतक व्यक्ती के संबंधियो के द्वारा सम्पन्न किया जाता है, जिससे परलोक में वह सुख, शांती पा सके.

❖ निष्कर्ष :-

विभिन्न संस्कारो के इस विवेचन से स्पष्ट होता है की, भारतीय संस्कृति में संस्कारो की योजना एक विशिष्ट प्रयोजन से की गई है| जन्म से मृत्यु तक व्यक्ती शारीरीक, बौध्दीक तथा मानसिक विकास तथा परिष्करण के लिये विभिन्न संस्कारो का विधान हुआ है| पारंभिक युग में संस्कारो का स्वरूप विस्तृत होता रहा और ग्रहसुत्रो तथा स्मृतियो में आकर वह सुस्थीर तथा अपरिवर्तनीय हो गया. कालक्रम में संस्कृत भाषाही प्रतिदीन के प्रयोग की भाषा न रही और उसी के साथ-साथ अधिकंश संस्कार भी सामान्य जन की बुद्धी और मन से दूर होते गए| वर्तमान युग में नामकरण, विवाह, अंन्त्येष्टि आदि कुछ ही संस्कार शेष बचे है| अन्य का तो नाम मात्र के लिए निर्वाह कर लिया जाता है|

❖ संदर्भ ग्रंथ :-

१. Kapadia K.M - Marrage and family in India
२. डांगे स.अ. - हिंदु धर्म आणि तत्वज्ञान
३. मुहम्मद फारूखा खॉ - वेद अणि कुराण
४. गुप्ता मोतीलाल शर्मा - भारतीय सामाजिक संस्थाएँ
५. शर्मा - ऋग्वेदकालीन भारतीय समाज
६. डॉ.राजकुमार - "महिला एवं विकास"

प्रा.डॉ.पडोळे डी.व्ही.
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख , बी.एस.एस.कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय माकणी ता.लोहारा. जि.उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

LBP PUBLICATION